2 अक्टूबर 2018, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 41, अंक : 13 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अक्टूबर (प्रथम), 2018 (वीर नि.संवत्-2544) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 14 सितम्बर से 23 सितम्बर तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश-विदेश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

● **बेलगांव (कर्नाटक) :** यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरान्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा शंका-समाधान एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित शीतलजी शेट्टी, पण्डित मिथुनजी शास्त्री, पण्डित एकत्वजी शास्त्री, पण्डित सुधर्मजी शास्त्री, पण्डित अक्षयजी शास्त्री, विदुषी धवलश्री पाटील के भी प्रवचन हुये। रात्रि में प्रवचन के उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

दिनांक 23 सितम्बर को दोपहर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में 'नयचक्र' विषय पर विद्वत्गोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें 12 विद्वानों के वक्तव्य का लाभ मिला। साथ ही जैन युवक मण्डल की स्वर्ण जयंती के अवसर पर पाठशाला चलाओ अभियान का उद्घाटन एवं विदुषी धवलश्री पाटील द्वारा किये गये नयचक्र के कन्नड़ अनुवाद का विमोचन डॉ. भारिल्ल द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त अहिंसा विषय पर 40 मिनिट का व्याख्यान आकाशवाणी पर भी हुआ।

श्वेताम्बर पर्यूषण में...

श्वेताम्बर पर्यूषण के अवसर पर मुम्बई चौपाटी सर्किल पर स्थित भारतीय विद्या भवन के विशाल वातानुकूलित हॉल में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान हुये। इसके अतिरिक्त एक-एक व्याख्यान मुरारबाग-सिटीटैंक एवं बालकेश्वर स्थित कमला हॉल में भी हुये। ज्ञातव्य है कि डॉ. भारिल्ल पिछले 33 वर्षों से श्वेताम्बर पर्यूषण में प्रवचनार्थ जा रहे हैं।

● **उदयपुर (राज.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर पंचायती नोहरा में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा प्रात: दशलक्षण धर्म एवं रात्रि में ज्ञानस्वभाव विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में श्री निखिल भैया द्वारा समयसार पर कक्षा एवं सायंकाल स्थानीय विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। तत्पश्चात् उदयपुर के प्रत्येक मण्डल द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति हुई। प्रात: दशलक्षण मंडल विधान पण्डित तपिशजी शास्त्री द्वारा संपन्न कराया गया।

● **औरंगाबाद (महा.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर केशरबाग में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से क्रिया-परिणाम-अभिप्राय विषय पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर द्वारा दोपहर में समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुए। प्रात: अभयजी द्वारा रचित अष्टपाहुड विधान का आयोजन पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर द्वारा किया गया। पण्डित संजयकुमाजी राउत शास्त्री द्वारा भी दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुए। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

● **छिन्दवाड़ा (म.प्र.) :** यहाँ गोलगंज में महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मंडल विधान के उपरान्त गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन हुआ। तदुपरान्त डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा प्रवचनसार पर एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। विदुषी प्रतीति पाटील द्वारा दोपहर में परीक्षामुख एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये, प्रात: गांधीगंज स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में इष्टोपदेश पर प्रवचन हुये। रात्रि में प्रवचन के उपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। विधान के समस्त कार्य पण्डित ऋषभजी शास्त्री द्वारा कराये गये।

● **लन्दन (यू.के.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर प्रतिदिन प्रात: नित्य-नियम पूजन के पश्चात् दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन हुआ। इस प्रसंग पर प्रतिदिन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रात: निश्चय-व्यवहार आदि विविध नयों के प्रयोग एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। अन्तिम दो दिन क्रमश: 'जम्बूद्वीप' एवं 'कर्मों का खेल' विषय पर सेमिनार भी किया गया। प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त जिनेन्द्र भक्ति एवं प्रतिक्रमण हुआ। पाठशाला

(शेष पृष्ठ 6 पर...)

सम्पादकीय –

ऐसे क्या पाप किये?

18

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आत्मा के स्वभाव का निर्णय कहो या सर्वज्ञता का निर्णय कहो – दोनों एक ही हैं; क्योंकि आत्मा का जो ज्ञान स्वभाव है, वही सर्वज्ञ भगवान को सर्वज्ञ पर्याय के रूप में प्रगट हुआ है। इसलिए आत्मा का पूर्ण स्वभाव पहचानने से उसमें सर्वज्ञ की पहचान भी आ जाती है; और सर्वज्ञ को पहचाने तो उसमें आत्मा के स्वभाव की पहचान भी आ जाती है। सर्वज्ञ-भगवान ने प्रथम तो अपने पूर्ण स्वभाव की श्रद्धा की और पश्चात् आत्मा में एकाग्र होकर पूर्ण ज्ञानदशा प्रगट की। उस पूर्ण ज्ञान द्वारा सर्वज्ञ भगवान एक समय में सब कुछ जानते हैं। ऐसा जहाँ सर्वज्ञ का यथार्थ निर्णय किया वहाँ अपने में भी अपने रागरहित ज्ञान-स्वभाव का निर्णय हुआ।

जिसप्रकार जड़ में 'अचेतनता' है, उसमें अंशतः भी ज्ञातृत्व नहीं है; उसीप्रकार आत्मा का ज्ञान स्वभाव है, उसमें ज्ञान परिपूर्ण है और अचेतनता बिल्कुल नहीं है। राग भी अचेतन के सम्बन्ध से होता है इसलिए राग भी ज्ञान-स्वभाव में नहीं है – ऐसे ज्ञान-स्वभाव का निर्णय और अनुभव करना ही धर्म का प्रारम्भ है।

प्रश्न :– सर्वज्ञ भगवान के ज्ञान में जब धर्म का प्रगट होना ज्ञात होगा, उसीसमय आत्मा में धर्म प्रगट होगा, इससमय यह सब समझने की क्या जरूरत है?

उत्तर :– अरे भाई! 'सर्वज्ञ भगवान ने सब कुछ देखा है और उसीप्रकार सब कुछ होता है' – ऐसा सर्वज्ञ के ज्ञान का और वस्तु के स्वभाव का निर्णय किसने किया? जो ज्ञान की पर्याय सर्वज्ञता का और वस्तु के स्वरूप का ऐसा निर्णय करती है वह ज्ञान पर्याय आत्मस्वभावोन्मुख हुये बिना नहीं रहती तथा उसे वर्त्तमान में ही धर्म का प्रारम्भ हो जाता है, और सर्वज्ञ भगवान के ज्ञान में भी वैसा ही ज्ञात हुआ होता है।

जिसने आत्मा के पूर्णज्ञान सामर्थ्य को प्रतीति में लेकर उसमें एकता की, वास्तव में उसी को सर्वज्ञ के ज्ञान की प्रतीति हुई है। जो राग को अपना स्वरूप मानकर राग का कर्त्ता बनता है, और रागरहित ज्ञान-स्वभाव की जिसे श्रद्धा नहीं है उसे सर्वज्ञ के निर्णय की सच्ची मान्यता नहीं है, इसलिए सर्वज्ञ के निर्णय में ही ज्ञान-स्वभाव के निर्णय का सच्चा पुरुषार्थ आ जाता है और वही धर्म है।

लोगों को बाहर में भाग-दौड़ करने में ही पुरुषार्थ मालूम होता है, किन्तु अन्तर में ज्ञान-स्वभाव के निर्णय में, ज्ञातादृष्टापने का सम्यक् पुरुषार्थ आ जाता है उसे बहिर्दृष्टि लोग नहीं जानते। वास्तव में ज्ञायकपना ही आत्मा का पुरुषार्थ है, ज्ञायकपने से पृथक दूसरा कोई सम्यक् पुरुषार्थ नहीं है।

अरे! मोक्ष प्राप्त करनेवाले जीव मोक्ष के पुरुषार्थ (प्रयत्न) पूर्वक ही मोक्ष प्राप्त करेंगे – ऐसा ही सर्वज्ञभगवान ने देखा है। ''जब भगवान ने देखा होगा तब मोक्ष होगा'' – ऐसे यथार्थ निर्णय श्रद्धा में तो आत्मा के परिपूर्ण स्वभाव का निर्णय भी साथ आ ही गया, और जहाँ ज्ञानस्वभाव का निर्णय हुआ वहाँ मोक्षमार्ग का सम्यक् पुरुषार्थ भी आ गया। स्वभाव और पुरुषार्थ की श्रद्धा वाले की होनहार भी भली होती है और उसकी काललब्धि भी मुक्तिमार्ग पाने की निकट आ गई इस तरह जिसके चार-चार समवाय हो गये तो उसके निमित्त भी तदनुकूल मिल ही जाता है।

इसप्रकार सर्वज्ञता, क्रमबद्धपर्याय में सच्चा पुरुषार्थ जाग्रत होता है। सभी भव्य प्राणी सर्वज्ञता का निर्णय कर देव-शास्त्र-गुरु के सच्चे श्रद्धानी बनकर आत्मकल्याण करें – यही मंगल कामना है।

भक्तामर स्तोत्र : एक निष्काम भक्ति स्तोत्र

सम्पूर्ण स्तोत्र साहित्य में भक्तामर सर्वाधिक प्रचलित स्तोत्र है।

मुनि श्री मानतुङ्गाचार्य द्वारा रचित भक्तिरस से सरावोर यह अनुपम स्तोत्र युगों-युगों से कोटि-कोटि भक्तों का कण्ठाहार बना हुआ है। क्या दिगम्बर और क्या श्वेताम्बर – सभी लोग इस स्तोत्र द्वारा प्रतिदिन वीतरागी परमात्मा की निष्काम स्तुति, भक्ति एवं आराधना करके अपने जन्म-जन्मान्तरों के पापों को क्षीण करते रहे हैं। लाखों माताएँ-बहिनें तो आज भी ऐसी मिल जायेंगी, जो भक्तामर का पाठ किये बिना जल-पान तक ग्रहण नहीं करतीं। इस काव्य के प्रति जन-सामान्य की इस अटूट श्रद्धा और लोकप्रियता के अनेक कारण हैं।

प्रथम, तत्त्वज्ञानियों की श्रद्धा का भाजन तो यह इसलिए है कि इसमें निष्काम भक्ति की भावना निहित है। ऐसा कहीं कोई संकेत नहीं मिलता है, जिसके द्वारा भक्त ने भगवान से कुछ याचना की हो या लौकिक विषय की वाञ्छा की हो।

जहाँ भय व रोगादि निवारण की चर्चा है, वह सामान्य कथन है, कामना के रूप में नहीं है। जैसे – कहा गया है कि 'हे जिनेन्द्र ! जो आप की चरण-शरण में आता है; उसके भय व रोगादि नहीं रहते, सभी प्रकार के संकट दूर हो जाते हैं।[१] इसीप्रकार 'जब परमात्मा की शरण में रहने से विषय का विष नहीं चढ़ता तो सर्प का विष क्या चीज है ? जब मिथ्यात्व का महारोग मिट जाता है तो जलोदरादि रोगों की क्या बात करें ?[२]

उपर्युक्त दोनों कथनों में याचना कहाँ है ? यह तो वस्तुस्वरूप का प्रतिपादन है। जो जीव विषय-कषाय की प्रवृत्ति छोड़कर निष्काम भाव से वीतराग परमात्मा के गुण-गान एवं आराधना करता है, उसकी मन्द कषाय होने से पाप स्वयं क्षीण हो जाते हैं एवं शुभभावों से सहज पुण्य बंधता है। पुण्योदय से बाह्य अनुकूल संयोग मिलते हैं और प्रतिकूलतायें स्वत: समाप्त हो जाती हैं। यह तो वस्तुस्थिति है। इसी वस्तुस्थिति या यथार्थ तथ्य का दिग्दर्शन कवि ने किया है।

जैसे फल से लदे वृक्ष के नीचे जो जायेगा, उसे फल तो मिलेंगे ही, न चाहते हुए भी छाया भी सहज उपलब्ध होगी। उसीप्रकार वीतराग देव की शरण में वीतरागता की उपलब्धि के साथ पुण्यबंध भी होता ही है। कभी-कभी धर्मात्माओं को पूर्व पापोदय के कारण प्रतिकूलता भी देखी जाती है; तब भी ज्ञानी खेद नहीं करते और भक्तिभावना के प्रति अश्रद्धा भी नहीं करते, क्योंकि वे निर्वाञ्छक धर्माराधना करते हैं और वस्तुस्वरूप को सही समझते हैं।

दूसरे, साहित्यिक रुचिवाले इस काव्य की साहित्यिक सुषमा से प्रभावित और आकर्षित होते हैं; क्योंकि इसकी सहज बोधगम्य भाषा, सुगमशैली, अनुप्रासादि अलंकारों की दर्शनीय छटा, वसन्ततिलका जैसे मधुरमोहक गेय छन्द, उत्कृष्ट भक्ति द्वारा प्रवाहित शान्त रस की अविच्छिन्न धारा - इन सबने मिलकर इस स्तोत्र को जैसी साहित्यिक सुषमा प्रदान की है, वैसी बहुत कम स्तोत्रों में मिलती है। इन सबके सुमेल से यह काव्य बहुत ही प्रभावशाली बन गया है।

तीसरे, लौकिक विषय वांछा की रुचिवालों को भी मंत्र-तंत्रवादी युग ने इसके प्रत्येक काव्य को आधार बनाकर विविध प्रकार के मंत्रों-तंत्रों द्वारा नानाप्रकार की रिद्धियाँ-सिद्धियाँ प्राप्त होने की चर्चायें कर दी हैं। कल्पित कथाओं द्वारा चमत्कारों को भी खूब चर्चित कर दिया है।

संभव है तत्कालीन परिस्थितियों में इन मंत्रों-तंत्रों की कुछ उपयोगिता एवं औचित्य रहा हो, पर आज तो कतई आवश्यकता नहीं है; तथापि आज वह भी इसकी लोकप्रियता का एक कारण बना हुआ है।

भक्ति और स्तोत्र के स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुए यदि भक्तामर स्तोत्र की विषयवस्तु पर विचार किया जाय तो स्तोत्रकार ने इस स्तोत्र द्वारा अपने इष्टदेव-वीतरागी सर्वज्ञ परमात्मा की आराधना करते हुए भक्तिवशात् व्यवहारनय से उनमें कर्तृत्व की भाषा का प्रयोग तो किया है, किन्तु किसी भी छन्द में कहीं कोई याचना नहीं की, मात्र निष्काम भाव से गुणगान ही किया है।

वीतरागी परमात्मा में कर्तृत्व का आरोप यद्यपि विरोधाभास-सा लगता है, तथापि स्तोत्र साहित्य में ऐसे प्रयोग हो सकते हैं; क्योंकि स्तवन या स्तोत्र की परिभाषा या स्वरूप बताते हुए आचार्यों ने लिखा है – ''भूताभूतगुणोद्भावनं स्तुति:'' अर्थात् आराध्य में जो गुण हैं और जो गुण नहीं हैं, उनकी उद्भावना का नाम ही स्तुति है। इसीप्रकार की स्तुतियों या स्तोत्रों में परम वीतराग अरहंतदेव को सुखों का कर्ता या दु:ख का हर्ता कह देना उन्हें सिद्धि या मोक्षदाता कह देना, उनके साथ स्वामी-सेवक संबंध स्थापित करना, उन्हें भक्तों को तारने का कर्तव्य-बोध कराना, उपालंभ देना, दीनता-हीनता प्रगट करना आदि कथन पाये जाते हैं।

वस्तुत: ऐसे औपचारिक उद्गार यदि भक्त की यथार्थ श्रद्धा और विवेक को विचलित नहीं करते तो स्तोत्र की दृष्टि से निर्दोष ही कहे जायेंगे, किन्तु केवल भक्ति की विह्वलता और भावुकता में ही ऐसे उद्गारों का औचित्य है। विचारकोटि में आने पर वीतरागता के साथ इनका मेल नहीं बैठता। भक्ति में जैसा वाणी से बोले वैसा ही मान ले, तो वह मान्यता यथार्थ नहीं है। **(क्रमश:)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

5 से 12 अक्टू.	जयपुर	शिक्षण शिविर
16 से 21 अक्टू.	पोन्नूर	तमिलनाडु तीर्थयात्रा
31 अक्टूबर	मुम्बई	शिखरजी यात्रा कार्यक्रम
4 से 8 नवम्बर	देवलाली	दीपावली
30 नव. से 2 दिस.	उदयपुर	वेदी प्रतिष्ठा

दीपावली पोस्टर मंगावें

दीपावली के अवसर पर पटाखों से होने वाले नुकसान दर्शाने वाले रंगीन पोस्टर, हैंडबिल, स्टीकर, हस्ताक्षर पत्रक एवं संकल्प पत्र आदि मंगाने हेतु **संपर्क करें** – 09785999100 - संजय शास्त्री।

दिन का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
द्वितीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
तृतीय	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
चतुर्थ	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
सप्तम	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
अष्टम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

जैनपथप्रदर्शक : जैनतिथिदर्पण

श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–४, बापूनगर, जयपुर–३०२०१५

१ जनवरी, २०१९ से ३१ दिसम्बर, २०१९ तक

श्री वीर निर्वाण सं. २५४५–२५४६ : विक्रम सं. २०७५–७६

रात का चौघड़िया

वार	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
प्रथम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
द्वितीय	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
तृतीय	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
चतुर्थ	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
पंचम	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
षष्ठ	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
सप्तम	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
अष्टम	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

पक्ष → / तिथि ↓	पौष १ जनवरी से २१ जनवरी				माघ २१ जनवरी से १९ फरवरी				फाल्गुन २० फरवरी से २० मार्च			
	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा			६	र	२१	सो×	५	मं	२०	बु	७	गु
द्वितीया			७ ८	सो मं	२२	मं	६	बु	२१	गु	८	शु
तृतीया			९	बु	२३	बु	७ ८	गु शु	२२	शु	९	श
चतुर्थी			१०	गु	२४	गु	९	श	२३	श×	१०	र
पंचमी			११	शु	२५	शु	१०	र	२३	श	११	सो
षष्ठी			१२	श	२६	श	११	सो	२४	र	१२	मं
सप्तमी			१३	र	२७	र	१२	मं	२५	सो	१३	बु
अष्टमी			१४	सो	२८	सो	१३	बु	२६	मं	१४*	गु
नवमी			१५	मं	२९	मं	१४	गु	२७	बु	१५	शु
दशमी			१६	बु	३०	बु	१५	शु	२८	गु	१६	श
एकादशी	जन.2019 १	मं	१७	गु	३१	गु	१६	श	मार्च १ २	शु श	१७	र
द्वादशी	२	बु	१८	शु	फरवरी १	शु	१७*	र×	३	र	१८	सो
त्रयोदशी	३	गु	१९	श	२	श	१७	र	४	सो	१९	मं
चतुर्दशी	४	शु	२०	र	३*	र	१८	सो	५	मं	२०	बु
पूर्णिमा/अमा.	५	श	२१	सो	४	सो	१९	मं	६	बु	२१*	गु×

पक्ष → / तिथि ↓	चैत्र २१ मार्च से १९ अप्रैल				वैशाख २० अप्रैल से १८ मई				ज्येष्ठ १९ मई से १७ जून			
	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	२१	गु	६	श	२०	श	५	र	१९	र	४	मं
द्वितीया	२२	शु	७	र	२१	र	६*	सो	२०	सो	५	बु
तृतीया	२३	श	८	सो	२२	सो	७*	मं	२१	मं	६	गु
चतुर्थी	२४	र	९	मं	२३	मं	८	बु	२२	बु	७	शु×
पंचमी	२५	सो	१०	बु	२४	बु	९	गु	२३	गु	७*	शु
षष्ठी	२६	मं	११	गु	२५	गु	१०	शु	२४	शु	८	श
सप्तमी	२७	बु	१२	शु	२६	शु	११	श	२५ २६	श र	९	र
अष्टमी	२८	गु	१३	श	२७	श	१२	र	२७	सो	१०	सो
नवमी	२९*	शु	१४	र	२८	र	१३	सो	२८	मं	११	मं
दशमी	३०	श	१५	सो×	२९	सो	१४	मं	२९	बु	१२	बु
एकादशी	३१	र	१५	सो	३०	मं	१५	बु	३०	गु	१३	गु
द्वादशी	अप्रैल १	सो	१६	मं	मई १	बु	१६	गु	३१	शु	१४	शु
त्रयोदशी	२ ३	मं बु	१७*	बु	२	गु	१७	शु×	जून १	श	१५	श
चतुर्दशी	४	गु	१८	गु	३	शु	१७	शु	२	र	१६	र
पूर्णिमा/अमा.	५	शु	१९	शु	४	श	१८	श	३	सो	१७	सो

पक्ष → / तिथि ↓	आषाढ़ १८ जून से १६ जुलाई				श्रावण १७ जुलाई से १५ अगस्त				भाद्रपद १६ अगस्त से १४ सित.			
	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	१८	मं	३	बु	१७*	बु	१	गु	१६	शु	३१	श
द्वितीया	१९	बु	४	गु	१८	गु	२	शु	१७	श	सितम्बर १	र×
तृतीया	२०	गु	५	शु	१९ २०	शु श	३	श	१८	र	१	र
चतुर्थी	२१	शु	६	श	२१	र	४	र	१९	सो	२	सो
पंचमी	२२	श	७	र	२२	सो	५	सो	२०	मं	३*	मं
षष्ठी	२३	र	८	सो×	२३	मं	६	मं	२१	बु	४	बु
सप्तमी	२४	सो	८	सो	२४	बु	७*	बु	२२	गु	५	गु
अष्टमी	२५	मं	९*	मं	२५	गु	८	गु	२३	शु	६	शु
नवमी	२६	बु	१०	बु	२६	शु	९	शु	२४	श	७*	श
दशमी	२७	गु	११	गु	२७	श	१०	श	२५	र	८	र
एकादशी	२८	शु	१२	शु	२८	र	११	र	२६	सो	९	सो
द्वादशी	२९	श	१३	श	२९	सो	१२	सो	२७	मं	१०	मं
त्रयोदशी	३०	र	१४	र	३०	मं	१३	मं	२८	बु	११*	बु
चतुर्दशी	जुलाई १	सो	१५	सो	३१	बु	१४	बु	२९	गु	१२*	गु
पूर्णिमा/अमा.	२	मं	१६*	मं	अगस्त १	गु×	१५*	गु	३०	शु	१३* १४	शु श

पक्ष → / तिथि ↓	आश्विन १५ सित. से १३ अक्टूबर				कार्तिक १४ अक्टूबर से १२ नव.				मार्गशीर्ष १३ नवम्बर से १२ दिस.				पौष १३ दिस. से ३१ दिसम्बर			
	कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल		कृष्ण		शुक्ल	
	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार	दिनांक	वार
प्रतिपदा	१५	र	२९	र	१४	सो	२८	सो×	१३	बु	२७	बु	१३	शु	२७	शु
द्वितीया	१६	सो	३०	सो	१५	मं	२९	मं	१४	गु	२८	गु	१४	श×	२८	श
तृतीया	१७	मं	अक्टूबर १	मं	१६	बु	३०	बु	१५	शु	२९	शु	१४	श	२९	र
चतुर्थी	१८	बु	२	बु	१७	गु	३१	गु	१६	श	३०	श	१५	र	३०	सो
पंचमी	१९	गु	३	गु	१८	शु	नवम्बर १	शु	१७	र	दिसम्बर १	र	१६	सो	३१	मं
षष्ठी	२०	शु	४	शु	१९	श	२	श	१८	सो	२	सो	१७	मं		
सप्तमी	२१	श	५	श	२०	र	३	र	१९	मं	३	मं	१८	बु		
अष्टमी	२२	र	६	र	२१	सो	४*	सो	२०	बु	४	बु	१९	गु		
नवमी	२३	सो	७	सो	२२	मं	५	मं	२१	गु	५	गु	२०	शु		
दशमी	२४	मं	८	मं	२३	बु	६ ७	बु गु	२२	शु×	६	शु	२१	श		
एकादशी	२५	बु	९	बु	२४	गु	८	शु	२२	शु	७	श	२२	र		
द्वादशी	२६	गु	१०	गु	२५	शु	९	श	२३	श	८ ९	र सो	२३	सो		
त्रयोदशी	२७	शु×	११	शु	२६	श	१०	र	२४	र	१०	मं	२४	मं		
चतुर्दशी	२७	शु	१२	श	२७	र	११	सो	२५	सो	११	बु	२५	बु		
पूर्णिमा/अमा.	२८	श	१३	र	२८*	सो	१२*	मं	२६	मं	१२	गु	२६	गु		

× तिथि क्षय * जैनव्रत एवं पर्व

जैन व्रत एवं पर्व :

ऋषभदेव निर्वाण दिवस – ३ फरवरी, २०१९
कविवर बनारसीदास जयन्ती – १७ फरवरी, २०१९
श्री ऋषभदेव जयन्ती – २९ मार्च, २०१९
अष्टान्हिका : (१) १४ मार्च से २१ मार्च, २०१९
(२) ९ जुलाई से १६ जुलाई, २०१९
(३) ४ नवम्बर से १२ नवम्बर, २०१९

श्री महावीर भगवान जयन्ती – १७ अप्रैल, २०१९
श्री कानजीस्वामी जयन्ती – ६ मई, २०१९
अक्षय तृतीया – ७ मई, २०१९
श्रुत पंचमी – ७ जून, २०१९
वीर शासन जयन्ती – १७ जुलाई, २०१९
मोक्ष सप्तमी (पार्श्व. निर्वाण) – ७ अगस्त, २०१९

रक्षा बन्धन – १५ अगस्त, २०१९
सोलहकारण व्रत – १६ अगस्त से १४ सितम्बर, २०१९
दशलक्षण व्रत – ३ सितम्बर से १२ सितम्बर, २०१९
पुष्पांजलि व्रत – ३ सितम्बर से ७ सितम्बर, २०१९
सुगन्ध दशमी – ८ सितम्बर, २०१९
रत्नत्रय व्रत – ११ सितम्बर से १३ सितम्बर, २०१९

अनन्त चतुर्दशी – १२ सितम्बर, २०१९
श्री भगवान महावीर निर्वाणोत्सव (दीपावली) – २८ अक्टूबर, २०१९
श्री कानजीस्वामी स्मृति दिवस – १९ नवम्बर, २०१९
जयपुर पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव – २२ से २४ फरवरी, २०१९

शिक्षण प्रशिक्षण शिविर – १९ मई से ५ जून, २०१९ तक, जयपुर
महाविद्यालय शिविर – २ अगस्त से ११ अगस्त, २०१९ तक, जयपुर
शिक्षण शिविर – ६ अक्टूबर से १३ अक्टूबर, २०१९ तक, जयपुर

प्रकाशचन्द जैन 'ज्योतिर्विद' मो. ९३५९९२३७७५
७३, लोहाई, मैनपुरी (उ.प्र.) के सौजन्य से, फोन : ०५६७२–२३४२२७

(पृष्ठ 1 का शेष...)

के बच्चों द्वारा विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। – संदीपभाई

● **जयपुर-टोडरमल स्मारक भवन (राज.) :** यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रात: दशलक्षण विधान के उपरान्त पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री द्वारा कार्तिकेयानुप्रेक्षा पर प्रवचन, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् उपाध्याय कनिष्ठ, वरिष्ठ के विद्यार्थियों व वीतराग विज्ञान महिला मंडल द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

सुगन्ध दशमी के दिन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर, टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय एवं वीतराग-विज्ञान महिला मंडल बापूनगर द्वारा **'निमित्त-उपादान अदालत में'** विषय पर आकर्षक व भव्य सजीव झांकी लगाई गई, जिसे जयपुर के लगभग 2000-2500 लोगों ने देखा और उसकी भरपूर सराहना की। विधि-विधान के कार्य पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने विद्यार्थियों के सहयोग से संपन्न कराये।

● **भीलवाड़ा (राज.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर अजमेरों की गोठ स्थित बड़े मन्दिर में डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' जयपुर द्वारा प्रतिदिन चारों अनुयोगों की शैली में दशलक्षण पर्व पर प्रवचन एवं दोपहर में शंका समाधान हुये। प्रात:काल बिचले मंदिर में समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

● **दुबई (यू.ए.ई.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर डॉ. सुदीपकुमारजी जैन दिल्ली द्वारा प्रात: पूजन-विधान के उपरांत सोलहकारण भावनाओं, दशलक्षण धर्म पर एवं रात्रि में विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर डॉ. सुदीपजी द्वारा प्रात:काल दशलक्षण विधान एवं रत्नत्रय विधान संपन्न हुये। साथ ही दो दिन बहरीन में भी प्रवचनों का लाभ मिला। ज्ञातव्य है कि स्थानीय विद्वान डॉ. नीतेशजी शाह एवं श्री आलोकजी जैन द्वारा दुबई व आसपास के देशों में तत्त्वप्रचार का कार्य किया जा रहा है।

● **शिकागो (अमेरिका) :** यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा प्रात: दशलक्षण मंडल विधान के अतिरिक्त प्रात: 47 शक्तियों पर एवं सायंकाल चारों अनुयोगों पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही बच्चों के लिये कहानी एवं रविवार को 170 तीर्थंकर विधान का भी आयोजन हुआ।

● **गुना (म.प्र.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर महावीर जिनालय में डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं रात्रि में भक्तामर स्तोत्र व मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। – राजकुमार जैन

● **हिंगोली (महा.) :** यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान के उपरान्त पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं दोपहर में पुरुषार्थसिद्धिउपाय एवं रात्रि में विविध विषयों पर प्रवचन हुये। इस अवसर पर स्थायी रविवारीय पाठशाला की स्थापना हुई। चतुर्दशी के दिन मंदिर में बड़ी टी.वी. पर डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म **'समय की ओर'** दिखाई गई।

मंगलवारा स्थित श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में पण्डित अमोलजी संघई शास्त्री द्वारा रात्रि में तत्त्वार्थसूत्र के द्वितीय अध्याय पर प्रवचन हुए।

जीजामाता नगर स्थित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में पण्डित पंकजजी संघई शास्त्री द्वारा रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

● **नागपुर (महा.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर इतवारी स्थित वीतराग विज्ञान भवन में नित्य नियम पूजन के उपरान्त गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन हुए। तत्पश्चात् ब्र. श्रेणिकजी जैन जबलपुर द्वारा समयसार एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार पर दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल विद्यानिकेतन के विद्यार्थियों द्वारा जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। दिनांक 23 सितम्बर को रत्नत्रय विधान एवं मूलनायक भगवान महावीर का महामस्तकाभिषेक भी हुआ।

● **सोलापुर (महा.) :** यहाँ पर्व के अवसर पर सैतवाल दिगम्बर जैन मन्दिर में पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा द्वारा प्रात: जिनेन्द्र पूजन के पश्चात् अपूर्व अवसर पर, दोपहर में पुरुषार्थसिद्धिउपाय पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

● **न्यूजर्सी (अमेरिका) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर फ्रैंकलिन टाउनशिप में स्थित जैन सेन्टर में पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के सान्निध्य में प्रात: जिनेन्द्र-पूजन का आयोजन किया गया, तत्पश्चात् समयसार पर प्रवचन एवं रात्रि में लघु प्रतिक्रमण के उपरांत दशलक्षण धर्म, मिथ्यात्व, अनेकान्त-स्याद्वाद आदि विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। अन्तिम दो दिन पंच परमेष्ठी विधान एवं दशलक्षण मंडल विधान संपन्न हुये। – हिमांशु जैन

● **मुम्बई :** यहाँ महापर्व के अवसर पर सीमंधर जिनालय में दशलक्षण मंडल विधान के उपरांत डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा समयसार व मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

● **कारंजा-लाड (महा.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर श्री दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित संजयजी सेठी जयपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल रत्नकरण्ड श्रावकाचार के आधार पर दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त दोपहर में कंकूबाई गर्ल्स हाई स्कूल में एवं सायंकाल कारंजा गुरुकुल में भी व्याख्यान हुये।

● **सागर-मकरोनिया (म.प्र.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा प्रात: नियमसार पर, दोपहर में द्रव्यसंग्रह एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

● **अजमेर (राज.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर सीमंधर जिनालय

एवं श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम में पण्डित सुनीलजी धवल व पण्डित अनिलजी धवल भोपाल द्वारा प्रात: पूजन-विधान एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति करायी गई। इसके अतिरिक्त पण्डित संजयजी जैन इंजी. खनियांधाना द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। सभी सांस्कृतिक कार्यक्रम अध्यात्मधाम ऋषभायतन में संपन्न हुये। दिनांक 24 सितम्बर को पण्डित सुनीलजी व पण्डित अनिलजी द्वारा ऋषभायतन में लघु वेदी प्रतिष्ठा भी संपन्न हुई। **– प्रकाश पाण्ड्या**

● **देवलाली-नासिक (महा.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर प्रात: दशलक्षण मंडल विधान के उपरान्त पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल द्वारा तीनों समय नियमसार, रहस्यपूर्ण चिट्ठी व मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधान के समस्त कार्य पण्डित दीपकजी धवल भोपाल व पण्डित उर्विशजी शास्त्री द्वारा संपन्न हुये। रात्रि में जिनल बहन द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

● **ठाकुरगंज (बिहार) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिन्दवाड़ा द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के पश्चात् बारह भावना, दोपहर में भक्तामर स्तोत्र एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

● **अहमदाबाद-बहरामपुरा (गुज.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर पण्डित नीशूजी शास्त्री द्वारा प्रात: पूजन के उपरान्त पूजन की जयमाला पर एवं सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

● **कोटा (राज.) :** यहाँ छावनी स्थित पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रात: जिनेन्द्र पूजन, दोपहर में श्री प्रेमचंदजी बजाज द्वारा प्रवचन एवं सायंकाल पण्डित गोमटेशजी शास्त्री, पण्डित निलयजी शास्त्री, पण्डित अभिनयजी शास्त्री व पण्डित पीयूषजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

मुमुक्षु आश्रम में नित्य नियम पूजन व गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त प्रात: गोमटेशजी शास्त्री द्वारा एवं रात्रि में पण्डित निलयजी शास्त्री व पण्डित अभिनवजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर को कक्षाएं एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

रामपुरा स्थित श्री दिगम्बर जैन पोरवाल मन्दिर में पण्डित आकेशजी जैन छिन्दवाड़ा द्वारा दोनों समय प्रवचन एवं सायंकाल बाल कक्षा का लाभ मिला।

इन्द्रविहार स्थित श्री सीमंधर जिनालय में पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी जैन मुजफ्फरनगर द्वारा दोनों समय प्रवचन एवं सायंकाल बालकक्षा का लाभ मिला। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

● **फालेगांव-हिंगोली (महा.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर आदिनाथ जिनालय में पण्डित आकाशजी हलाज शास्त्री द्वारा प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त 'जीवन जीने की कला' व 'क्षमावाणी पर्व' विषय पर भी प्रवचन हुए। सायंकाल बाल कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। विशेष उपलब्धि के रूप में बच्चों की पाठशाला का प्रारम्भ किया गया।

● **किशनगढ-अजमेर (राज.) :** यहाँ महापर्व के अवसर पर हमीद कॉलोनी स्थित महावीर जिनालय में प्रतिदिन प्रात: दशलक्षण मंडल विधान के अतिरिक्त पण्डित दुर्लभजी शास्त्री द्वारा विविध विषयों पर प्रवचन, दोपहर में देवागम स्तोत्र व कर्मों की प्रकृतियों पर कक्षा एवं रात्रि में पण्डित अखिलजी शास्त्री द्वारा दशलक्षण धर्म पर रोचक शैली में मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। **– कुसुम चौधरी**

● **जयपुर के विभिन्न उपनगरों** में पर्व के अवसर पर जौहरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी पंचायती बड़े मन्दिर में प्रात: पण्डित अरुणजी बण्ड, आदर्शनगर स्थित मुल्तान दिगम्बर जैन मन्दिर में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, सी-स्कीम स्थित आदिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ, सी-स्कीम स्थित सेठी चैत्यालय में पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री रहली, प्रतापनगर सेक्टर-8 में पण्डित संजीवजी शास्त्री खडैरी, प्रतापनगर सेक्टर-11 में पण्डित अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, श्री दिगम्बर जैन खजांची की नसियां में पण्डित दीपकजी शास्त्री मडदेवरा, शक्तिनगर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित परेशजी शास्त्री एवं सिवाड़ मन्दिर में पण्डित राहुलजी शास्त्री खडैरी द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला।

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय की –

साप्ताहिक गोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित गोष्ठियों के क्रम में दिनांक 16 सितम्बर को **'जैन सिद्धांतों की नींव-पाठमालाएं'** विषय पर गोष्ठी आयोजित हुई, जिसकी अध्यक्षता पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने की।

श्रेष्ठ वक्ता के रूप में दिव्यांश जैन अलवर एवं सर्वज्ञ जैन बरगी रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण विराग बेलोकर (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं संचालन उपाध्याय वरिष्ठ के यश जैन व अनिमेष भारिल्ल ने किया। आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा की –

नवीन कार्यकारिणी गठित

नागपुर (महा.) : यहाँ इतवारी स्थित श्री कुंदकुंद दिगंबर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की नवीन कार्यकारिणी का गठन हुआ, जो निम्नानुसार है - श्री विवेकजी टक्कामोरे **(अध्यक्ष)**, श्री विशालजी मोदी **(उपाध्यक्ष)**, पंडित रवींद्रजी महाजन शास्त्री **(मंत्री)**, श्री निकुंजजी सिंघई **(उपमंत्री)**, सी.ए. अक्षतजी मोदी **(कोषाध्यक्ष)**, श्री अभिषेकजी (निक्की) जैन व श्री रोहितजी देवडिया **(प्रचार मंत्री)**, श्री शैलेषजी जैन व श्री राहुलजी मोदी **(सांस्कृतिक मंत्री)**, श्री अंकुरजी जैन सागरवाले, श्री अजितजी जैन गुनावाले, श्री उत्कर्षजी मोदी **(सदस्य)**।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में

21वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(दिनांक 5 अक्टूबर से 12 अक्टूबर, 2018 तक)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के निर्देशन में आयोजित उक्त शिविर में विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से जैनदर्शन के विविध विषयों का गहराई से अध्ययन/अध्यापन कराया जायेगा। अत: अन्य शिविरों से पृथक् यह शिविर जैनदर्शन के सूक्ष्म अध्ययन के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिये एक स्वर्ण अवसर होगा।

-: विद्वत्समागम :-

ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, डॉ. प्रवीणकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित अच्युतकान्तजी शास्त्री जयपुर।

आप सभी को शिविर में पधारने हेतु हार्दिक आमंत्रण है।

नोट : कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें।

संपर्क - पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)
फोन : 0141-2705581, 2707458 **E-mail : ptstjaipur@yahoo.com**

सोश्यल मीडिया द्वारा तत्वप्रचार

समयसार पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन
अब WhatsApp पर भी उपलब्ध है।
7297973664
को अपने मोबाईल में PTST प्रवचन के नाम से SAVE करें।
अपना नाम एवं स्थान लिखकर 7297973664 पर WhatsApp करें।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी आप हमारे facebook पेज pandit todarmal smarak trust के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.facebook.com/ptst.jaipur

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की सभी गतिविधियों की जानकारी एवं सत्साहित्य का ऑनलाईन ऑर्डर देने हेतु visit करें -
www.ptst.in

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित नियमित कक्षाओं एवं प्रवचनों का लाभ आप हमारे YouTube चैनल PTST के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।
www.youtube.com/user/todarmalsmaraktrust

जैनधर्म को प्रारम्भ से सीखने अथवा और भी विविध विषयों को डॉ. संजीवकुमार गोधा द्वारा YouTube पर सुनने के लिये निम्न लिंक का प्रयोग करें -
www.youtube.com/c/drsanjeevgodha

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

प्रकाशन तिथि : 28 सितम्बर 2018

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com